LG Sinha releases Dr. Ashok Gadiya's book "Mere Anubhav aur Itihas Ke Jharoke se Kashmir"

NEWDELHI, OCTOBER 15: Lieutenant Governor, Manoj Sinha released a book "Mere Anubhav aur Itihas Ke Jharoke se Kashmir" written by Dr. Ashok Kumar Gadiya, Chancellor, Mewar University.

The Lt Governor praised the author for exploring crucial aspects of the transformation of Jammu Kashmir over the years, playing a significant part of the transformational journey of youth and giving back to the society through education.

Highlighting the need to understand the important historical and political developments that took place in J&K since independence, the Lt Governor said, under the guidance of Prime Minister Shri Narendra Modi ji, we have made committed efforts to break the barriers hindering the development of J&K, said the Lt Governor.

Equality, progressiveness, empowerment of all, good governance, transparent & accountable administration, improved infrastructure & connectivity, modern & affordable healthcare & educational services, industrial growth, a strong grass root democratic setup and the 'People First' principle of governance has reduced the developmental gap of seven decades, said the Lt Governor.

Our deep and abiding commitment for upliftment of deprived section of society has translated the dream of social equity and justice into reality. The social and economic transformation in the last three years

»Contd. On Page 6

'मेरे अनुभव और इतिहास के झरोखे से कश्मीर' का विमोचन

गंगरार, 16 अक्टूबर (जसं.)। देश और दुनिया में कश्मीर हमेशा से चर्चा और कौतहूल का विषय रहा है। कश्मीर को इतिहास और अनुभव दोनों के नजरिये से देखकर ही समझना चाहिए।

इसी क्रम में कश्मीर को लेकर अपने अनुभवों को साझा करती हुई प्रख्यात शिक्षाविद और मेवाड़ विश्विद्यालय के चेयरमैन अशोक गदिया की पुस्तक 'मेरे अनुभव और इतिहास के झरोखे से कश्मीर' का विमोचन जम्मू-कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा और इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार रामबहादुर राय द्वारा हिंदी भवन सभागार नई दिल्ली में किया गया। प्रभात पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक जम्मू कश्मीर को नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है।

समारोह में जम्मू-कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा कि ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टिकोण से डॉ. अशोक कुमार गदिया की पुस्तक 'मेरे अनुभव और इतिहास के झरोखे से कश्मीर' बहुत ही शानदार और पठनीय है। अगर किसी को भारत और विशेषकर कश्मीर को समझना है तो इस पुस्तक को हर

हाल में पढ़ना चाहिए। उन्होंने पुस्तक के प्रथम अध्याय को विशेष बताते हुए जम्मू कश्मीर को देश की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए वहाँ हो रहे विकास कार्यों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि अब जम्मू-कश्मीर में कोई भी कार्यक्रम राष्ट्रगान से शुरु होता है और राष्ट्रगान पर खत्म होता है, पहले ऐसा नहीं होता था। विकास के लिए जम्मू-कश्मीर में लगभग एक लाख करोड़ के प्रोजेक्ट्स चल रहे है और यहाँ धरातल पर सकारात्मकता बढ़ी है। सरकार जम्मू-कश्मीर में शांति स्थापित करने की कोशिश कर रही है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार रामबहादुर राय ने कहा कि जिसने इस पुस्तक के पहले अध्याय को पढ़ा, समझा और अनुभव कर लिया, उसके लिए कश्मीर के इतिहास का झरोखा खुलता जाता है। यह पुस्तक इसी अध्याय में पूरी और यहीं से शुरु भी होती है। यही अध्याय पुस्तक का सूत्र रुप है। जिसे सूत्र समझ में आ जाए उसके लिए शेष पुस्तक उसका भाष्य होगा। उन्होंने पुस्तक के पहले अध्याय में कश्मीरी छात्रों के लिए लेखक के कठिन संघर्षों का जिक्र किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष जवाहर लाल कौल ने कहा कि पुस्तक ऐतिहासिक तथ्यों से भरपूर और पठनीय है। लेखक के अपने अनुभव लिखने का अंदाज एकदम निराला है। स्टोरी टेलिंग की स्टाइल में अनुभव है। बड़ी बातों को सहजता से कहा गया है। कश्मीर को करीब से जानने के लिए हर किसी को ये किताब जरुर पढ़नी चाहिए। विशिष्ट अतिथि एकात्म मानव प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डॉ. महेश चंद्र शर्मा ने कहा कि कश्मीर और कश्मीरियत को सही अर्थों में समझने के लिए यह पुस्तक अद्भुत है। लेखक ने पूरे कश्मीर का भ्रमण करके अपने अनुभवों के आधार पर इसे लिखा है, जो सभी के लिए बहुत उपयोगी है।

पुस्तक के लेखक डॉ. अशोक गदिया ने आये हुए सभी अतिथियों का आभार जताते हुए कहा कि कश्मीर न सिर्फ भारत का अभिन्न अंग है बल्कि उसकी आत्मा है। उन्होंने मेवाड़ विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले कश्मीरी छात्रों के लिए संघर्ष का जिक्र करते हुए अपने अनुभव साझा किये।

पुस्तक विमोचन के दौरान मेवाड़ विश्विद्यालय के बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट के सदस्य अर्पित माहेश्वरी, निदेशक डॉ. शशांक द्विवेदी, अविनाश चंद्र, संदीप शर्मा सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

कश्मीर और कश्मीरियत को सही अर्थों में समझने के लिए अद्भुत पुस्तक : डॉ महेश चंद्र शर्मा

वीरेन्द्र सिंह/अमर भारती संवाददाता

नई दिल्ली। देश और दुनिया में कश्मीर हमेशा में चर्चा और कौतहूल का विषय रहा है। कश्मीर को इतिहास और अनुभव दोनों के नजरिये से देखकर ही समझना चाहिए। इसी क्रम में कश्मीर को लेकर अपने अनुभवों को साझा करती हुई एक पुस्तक का विमोचन जम्मू -कश्मीर के उप राज्यपाल श्री मनोज सिन्हा, और इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) के अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार रामबहादुर राय द्वारा प्रख्यात शिक्षाविद और मेवाड़ विश्विद्यालय के चेयरमैन अशोक गदिया की पुस्तक मेरे अनुभव और इतिहास के झरोखे से कश्मीर का विमोचन , हिंदी भवन सभागार, नई दिल्ली में किया गया।

प्रभात पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक जम्मू कश्मीर को नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है । समारोह में जम्मू - कश्मीर के उप राज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने कहा कि ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टिकोण से डॉ. अशोक कुमार गदिया की किताब; मेरे अनुभव और इतिहास के झरोखे से कश्मीर बहुत शानदार और पठनीय है ..अगर किसी को भारत और विशेषकर कश्मीर को समझना है तो इस किताब को हर हाल में पढ़ा जाना चाहिए। उन्होंने पुस्तक के प्रथम अध्याय को विशेष बताते हुए जम्मू कश्मीर को देश की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए वहाँ हो रहे विकास कार्यों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि अब जम्मू कश्मीर में कोई भी कार्यक्रम राष्ट्रगान से शुरू होता है और राष्ट्रगान पर खत्म होता है। पहले ऐसा नहीं होता था । विकास के लिए जम्मू - कश्मीर में लगभग एक लाख करोड़ के प्रोजेक्ट्स चल रहें है और वहाँ धरातल पर सकारात्मकता बढ़ी है । सरकार जम्मू कश्मीर में शांति स्थापित करने की कोशिश कर रही है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार रामबहादुर राय ने कहा कि जिसने इस पुस्तक के पहले अध्याय को पढ़ा, समझा और अनुभव कर लिया, उसके लिए कश्मीर के इतिहास का झरोखा खुलता जाता है यह पुस्तक इसी अध्याय में पूरी और यहीं से शुरू भी होती है। यही अध्याय पुस्तक का सूत्र रूप है। जिसे सूत्र समझ में आ जाए उसके लिए शेष पुस्तक उसका भाष्य होगा। उन्होंने पुस्तक के पहले अध्याय में कश्मीरी छात्रों के लिए लेखक के कठिन संघर्षों के जिक्र किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि जम्मू - कश्मीर अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष जवाहरलाल कौल ने कहा कि पुस्तक ऐतिहासिक तथ्यों से भरपूर और पठनीय है,लेखक के अपने अनुभव लिखने का अंदाज एकदम निराला है, स्टोरी टेलिंग की स्टाइल में अनुभव है, बड़ी बातों को सहजता से कहा गया है। कश्मीर को करीब से जानने के लिए हर किसी को ये किताब जरूर पढ़नी चाहिए। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एकात्म मानव प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डॉ महेश चंद्र शर्मा ने कहा कि कश्मीर और कश्मीरियत को सही अर्थों में समझने के लिए ये अद्भुत पुस्तक है। लेखक ने पूरे कश्मीर का भ्रमण करके अपने अनुभवों के आधार पर इसे लिखा है जो सभी के लिए बहुत उपयोगी है । पुस्तक के लेखक डॉ अशोक गदिया ने आये हुए सभी अतिथियों का आभार जताते हुए कहा कि कश्मीर न सिर्फ भारत का अभिन्न अंग है बल्कि उसकी आत्मा है । उन्होंने मेवाड़ विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले कश्मीरी छात्रों के संघर्ष का जिक्र करते हुए अपने अनुभव साझा किये ।

किताब के इस अंश से लेखक के विचार को समझिये : मुझे भरोसा है कि कुछ ही दिनों में हम हंसता, बोलता और खेलता हुआ कश्मीर देखेंगे। जो बम धमाके, बंदूखे ,गोलियां और आतंकवाद वहाँ दिख रहा है , उसकी जगह हँसते खेलते बच्चें स्कूल जाएंगे, लोगों का इलाज होगा ,युवाओं को रोजगार मिलेगा और डल ,लेक में किसी भी प्रकार के डर के बगैर कोई भी नागरिक आराम से परिवार के साथ जा पाएगा। पुस्तक के लेखक डॉ अशोक गदिया ने पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई के बयान को उद्धृत करते हुए लिखा है कि हम दोस्त बदल सकते है परंतु पड़ोसी नही बदल सकते .हमें आपस मे मिल जुलकर रहना पड़ेगा तथा एक सुदृढ़ ,स्वस्थ और समृद्ध पाकिस्तान भारत के हित मे होगा। विमोचन कार्यक्रम में सैकड़ों अतिथियों की भागीदारी रही। इस कार्यक्रम का समापन मेवाड़ इंस्टीट्यूट गाजियाबाद की निर्देशिका डॉ अलका अग्रवाल द्वारा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन देकर किया गया। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों का आभार जताया। पुस्तक विमोचन के दौरान मेवाड़ विश्विद्यालय के बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट के सदस्य अर्पित माहेश्वरी, मेवाड़ विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ शशांक द्विवेदी ,लोकनीति के जानकार अविनाश चंद्र , आर्गेनिक खेती के विशेषज्ञ संदीप शर्मा सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

अमर भारती में प्रकाशित समाचार, विचार, लेख अथवा विज्ञापन से यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो कृपया सम्पादक एवं सुझाव समूह सम्पादक को ईमेल- editor@amar

घाटी में आतंकवाद दो वर्ष भी नहीं टिकेगा : मनोज सिन्हा

नई दिल्ली में शनिवार को जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स के प्रमुख राम बहादुर राय के साथ अशोक कुमार गाड़िया द्वारा लिखित पुस्तक "कश्मीर" का विमोचन किया।

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। जम्मू-कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा ने शनिवार को कहा कि सब कुछ ठीक रहा तो घाटी में आतंकवाद दो वर्ष से ज्यादा नहीं टिक पाएगा। उन्होंने कहा कि 20 साल की तुलना में आतंकवाद से निपटने के सबसे बेहतर आंकड़े हैं। इस दिशा में पहले सही तरीके से प्रयास नहीं हुए, लेकिन मौजूदा केंद्र सरकार सही दिशा में काम कर रही है।

उपराज्यपाल दिल्ली में डॉ. अशोक कुमार गदिया द्वारा लिखी गई पुस्तक 'मेरे अनुभव और इतिहास के झरोखे से कश्मीर' के विमोचन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर बोल रहे थे। वहीं, प्रख्यात पत्रकार राम बहादुर राय ने कहा कि धारा 370 और 35 ए अनुच्छेद के रूप में धोखा किया गया था, उसे खत्म कर सरकार ने स्वागत योग्य कदम उठाया था। कार्यक्रम में जम्मू कश्मीर अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष प्रो. जवाहर लाल कौल, एकात्म मानव प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डॉ. महेश चंद्र शर्मा सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

कश्मीरी पंडितों ने मार्ग जाम किया

जम्मू। सैकड़ों विस्थापित कश्मीरी पंडित कर्मचारियों ने शोपियां में आतंकियों द्वारा पूरन भट की हत्या करने के विरोध में शनिवार को जम्मू-अखनूर मार्ग पर जाम लगा दिया। मई में कश्मीर में राहुल भट की हत्या के बाद से पिछले पांच महीनों में प्रधानमंत्री रोजगार पैकेज के तहत कार्यरत कश्मीरी पंडित जम्मू में राहत आयुक्त कार्यालय में विरोध कर रहे हैं। पूरन की हत्या की खबर लगते ही लोग प्रदर्शन स्थल से बाहर आए और जाम लगाया।

'मेरे अनुभव और इतिहास के झरोखे से कश्मीर' का विमोचन

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 15 अक्तूबर।

कश्मीर के अनुभवों को लेकर शिक्षाविद् और मेवाड़ विश्वविद्यालय के चेयरमैन अशोक गदिया की लिखी पुस्तक 'मेरे अनुभव और इतिहास के झरोखे से कश्मीर' का विमोचन शनिवार को हिंदी भवन सभागार में जम्मू कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा ने किया।

इस मौके पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार रामबहादुर राय भी उपस्थित रहे। मनोज सिन्हा ने कहा कि ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टिकोण से डा गदिया की किताब पठनीय है। अगर किसी को भारत और विशेषकर कश्मीर को समझना है तो इस किताब को हर हाल में पढ़ा जाना चाहिए।

उन्होंने पुस्तक के प्रथम अध्याय को विशेष बताते हुए जम्मू कश्मीर को देश की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए वहां हो रहे विकास कार्यों का जिक्र किया। उप राज्यपाल ने कहा कि सरकार जम्मू कश्मीर में शांति स्थापित करने की कोशिश कर रही है। रामबहादुर राय ने कहा कि जिसने इस पुस्तक के पहले अध्याय को पढ़ा, समझा और अनुभव कर लिया, उसके लिए कश्मीर के इतिहास का झरोखा खुलता जाता है यह पुस्तक इसी अध्याय में पूरी और यहीं से शुरू भी होती है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि जम्मू कश्मीर अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष जवाहर लाल कौल, महेश चंद्र शर्मा व अन्य भी उपस्थित रहे।